श्री सत्संग सभा, शिमला

॥ सम्मिलित प्रार्थना ॥

परम पिता पूरण प्रभु, परमानन्द अपार।
प्रेम रुप पावन परम, ईश्वर सर्वाधार॥
दीन दयालु दयानिधे, दाता परम उदार।
सब देवन के देव हे, दुख दोषन से पार॥
शक्ति ज्ञान आनन्द के, हे पूरण भण्डार।
सब से सुन्दर हे हरे, सब सारों के सार॥
हाथ जोड़ हो बन्दना, तुझ को बारम्बार।
भक्ति भाव से नम्र हो, मन में श्रद्धा धार॥
तेरी ऐसी हो दया, हम में बढ़े मिलाप।
सन्घ शक्ति का मान हो, मिटे फूट का पाप॥
मीठी माला मेल की, फेरें हम दिन रात।
जो जीवन से एक हो, तजें कलह की बात॥
हम में आवे एकता, भ्रातृ पन का भाव।
दिनों दिन बल शक्ति बढ़े, धरम करम में चाव॥